thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 November 2014

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-8, अंक-9 दिसम्बर 2014 विक्रमी संवत् 2071 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये सहयोग राशि 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

हम अज्ञानी

त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्रे वि यन्ति वनिनो न वयाः।
श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीडयो रीतिरपाम्॥

– ऋक्. 6.13.1

ऋषिः-**भरद्वाजो बार्हस्पत्यः**॥ देवता-**अग्निः**॥ छन्दः-**पक्तिः**॥

शब्दार्थ-अग्रे=हे अग्रे! **सुभग**=हे सुन्दर ऐश्वर्यवाले! **त्वत्**=तुझसे ही **विश्वा**=सब **सौभगानि**=सुन्दर ऐश्वर्य **वियन्ति**=विविध प्रकार से निकलत हैं, **वनिनः न**=जैसे वृक्ष से **वयाः**=शाखाएँ (विविध प्रकार से निकलती हैं।)। तुझ वृक्ष का सेवन करनेवालों को **श्रुष्टिः**=शीघ्र ही **रयिः**=भौतिक धन **वृत्रतूर्ये वाजः**=युद्ध में बल **दिवः वृष्टिः**=अन्तरिक्ष की दिव्य वृष्टि तथा **अपां रीतिः**=इन जलों को गति देनेवाली **ईडयः=स्तुत्य** ज्योति प्राप्त हो जाती है।

विनय- हम कितने मूर्ख हैं कि मूल को न सींचकर पत्तों को पानी दे रहे हैं। हे अग्रे! तुम तो सब सौभगों के कल्पतरू हो, परन्तु हम एक तुम्हारा सेवन न कर अपनी अनगिनत इच्छओं के, इष्ट वस्तुओं के पीछे मारे-मारे फिर रहे हैं। इस इंसार में जो भी कुछ विविध प्रकार के सौभाग्य के समान दृष्टिगोचर हो रहे हैं, जो भी कुछ सुन्दर ऐश्वर्य दीख रहे हैं वे सब-के-सब एक तुमसे ही निकलते हैं, तुमसे ही सर्वत्र फैले हैं। यह विश्व जिन अनन्त प्रकार की सुन्दर सम्पत्तियों से भरा पड़ा है उन सबके मूल में, हे सुभग! तुम ही हो। यदि हम एक तुम्हारी उपासना करें, तो हमारी शेष सब उपास्य वस्तुएँ हमें स्वयमेव मिल जाएँ, तुम वृख के प्राप्त करने से शेष शाखा, डाली, पुष्प, फल आदि सब-कुछ हमें स्वयमेव प्राप्त हो जाएँ। एक तुम्हारे सुभग सेवन से हमें सब सौभग मिल जाएँ। इतना ही नहीं, किन्तु ये सौभग, ये सुन्दर ऐश्वर्य हमें ठीक प्रकार से और ठीक प्रमाण में मिल जाएंगे। जब हम तेरा सेवन करेंगे तो हमें जब जिस ऐश्वर्य की, जिस क्रम से, जिस मात्रा में आवश्यकता होगी, वह ऐश्वर्य उसी क्रम, उसी मात्रा में हमें ठीक-ठीक मिलता जाएगा और बड़ी शीघ्रता से तुरन्त मिलता जाएगा। तेरे भजनेवाले को सब भौतिक धन, उसकी पार्थिव (शारीरिक) आवश्यकताओं की पूर्ति के सब साधन शीघ्र ही मिल जाते हैं। उसे पाप के समूल नाश के लिए, पाप से लड़ने के लिए जीवन-संघर्ष में विजयी होने के लिए जिस बल, तेज, सामर्थ्य की आवश्यकता है, वह भी ठीक समय पर मिल जाता है। इसके बाद उसे अन्तरिक्षलोक की वृष्टि, मानसिक लोक की दुर्लभ महान् सन्तुष्टि, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाती और यह दिव्य वृष्टि ही नहीं, किन्तु इन दिव्य जलों की प्रेरक, इनको गति देनेवाली जो स्तुत्य जगद्वन्द्य दिव्य ज्योति है, वह आदित्य ज्योति भी अन्त में उन्हें मिल जाती है। इस प्रकार पार्थिक, आन्तरिक्ष और दिव्य (आत्मिक) एक-से-एक ऊँचे ऐश्वर्य, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, एक तेरा ही सेवन करते जानेवाले को पूरी तरह मिल जाते हैं। फिर भी हम मूर्ख न जाने क्यों, एक तेरे ही सेवन में नहीं लगते, एक तुझ मूल का आश्रय नहीं पकड़ते

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

असावि सोमो अरूषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
युनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्।।
पर्जन्यः पिता महिषस्य पणिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे।
स्वसार आपो अभि गा उदासरन्त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे।।
कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परियासि निर्जिगाम।।845।।

ज्ञान प्रकाश से चमक आह्लादक, सुन्दर सुख का दान करे।
अनहद नाद से प्रेरित कर, अंगो में कर्मशक्ति प्रज्ञान भरे।।
ज्ञानशक्ति से शुद्ध बना, यह छलनी से पावन बनता।
बाजगति से अन्तःकरण में, उत्तम रस बन कर छनता।।
महान वृक्षों को उत्पन्न कर, जल बरसा हरियाली भरता।
ऊँचे पर्वत शिखरों पर, वही मेघ रहा करता।।
सारी पृथिवी भरने वाली, धाराएँ वहाँ से आती हैं।
मेघों को साथ लिये, नीलम के घर वे रह जाती हैं।।
हे सोम तू परमानन्द का स्वामी, क्रांति दिखाने वाला है।
अज्ञान का पर्दा फाड़ सके, तू शुद्ध तेज, बल, वाला है।।
अश्वगति से शीघ्र भाग कर, ज्ञान दिशा को जाता है।
दुर्भावों, दुष्कर्मो का नाश करे, ज्ञान से ज्योति पाता है।।

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः।।
अलषिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनोदानाय चोदयन्।।846।।

प्रेरक प्रभु के आश्रय से, परापर सम्पत्ति पा जाते।
इन्द्र की शक्ति से सब, अपने अपने भाग से सुख पाते।।
स्तुति करो ऐश्वर्यदाता की, वह ही कल्याणकारी है।
प्रज्ञाशक्ति से साधक पाता, उसके दान दुःखहारी है।।
साधक मन से ध्यान लगाता, दिव्य मन की शक्ति पाता।
मनोकामना पूरी करता, मनशक्ति से दानी हो जाता।।

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो वि मृधो जहि।।
त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधर्ता।
तं त्वा वयं मघवन्निद्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे।।847।।

हे दिव्य मन, भय कारण नष्ट कर, निर्णय बना।
तू शक्तिशाली तू समर्थ, द्वेष हिंसा को भगा।।
हे इन्द्र तू ऐश्वर्य स्वामी, महान जीवन देता।
सम्पत्ति के लिए तुझे पुकारें, तू है प्रशंसनीय नेता।।

त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्य मंहयद्रयिः।।
त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः।।
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममा भर।।848।।

हे साम तू आनन्ददाता, जीवन यज्ञ का पालक।
मेरे अन्तःकरण में आ जा, सुख संपत्ति का रक्षक।।
तू ही रक्षक तू आह्लादक, तू ही मन से बह आता।
जीवन-रण में जीत दिला, स्वयं चोट नहीं खाता।।
अभेद्य ग्रन्थियों से बहकर, तू प्रेरक गीत सुनाता।
ज्ञान ज्योति से जगमग करता, ज्ञान बल का दाता।।

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ।।
तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ।।
आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम्।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वविदः ।।849।।

दिव्य इन्द्रियों को भोजन देने, आह्लादक सोम तू धारा बन।
हमारे हृदय में बस जा, तू अमृत का प्यारा बन।।
तेरा बहता रस सुख देता, बुद्धि को करता बलवान।
दिव्य इन्द्रियाँ दिव्य गुण पाने को करती तेरा आह्वान।।
बहता हुआ आनन्ददाता, यह सोम सम्पत्ति लाता।
रस ज्ञान कांति बरसा कर, कर्मशक्ति से भरे सुखदाता।।

परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
यो देवान्विश्वां इत्परि मदेन सहगच्छति।।
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम्।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ।।
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे।
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ।।850।।

जो रस सारे अंगो में, आनन्द का रस भर देता।
सुन्दर दुःखनाशक रस को, भक्त ज्ञान से शुद्ध कर लेता।।
ध्यान धारण से जो मिलता, वह सोम जितेन्द्रिय पाता।
मित्र बनी दस इन्द्रियां मिल, उसको धोतों तब आता।।
हे सोम तू प्रज्ञाशक्ति में जाता, अज्ञान का नाश किया करता।
क्रियाशक्तिदाता जीवन यज्ञ का स्वामी बन तू शक्ति भरता।।

पवस्य सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय।।
प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय।।
शिशुं जज्ञानं हरि मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम।।851।।

बलवान पुष्ट अश्व नर की, युद्ध में विजय दिलाता।
हे सोम तू शक्ति का साधन, तू है आनन्द रस पिलाता।।
साधक योगी, प्रेरक सोम, आनन्दरस को सदा बहाते।
तेज पाने को साधन करते, तब वे तुझ को हैं पाते।।
शरीर निवासी चेतनतादायक, दुःखहर्ता सुखदाता है।
उसी सोम को इन्द्रियों के हित, साधक मन में पाता है।।

[क्रमशः]

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

चिन्ता से चिन्तन और चिन्तन से चिरन्तन की ओर

–आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

भय के रूप

मनोविज्ञान में भय के पाँच हजार रूप बताए गए हैं। यह बात आतिशयोक्ति हो सकती है परन्तु यदि जीवन को गहराई से देखें तो प्राय: हर घटना भय पर आधारित है। मनुष्य अकेला रहने से उबता है। इसलिए विवाह करवाता है। विवाह के बाद भी अकेलापन खटकता है तथा यह भय होता है कि वृद्धावस्था में हमारी सेवा कौन करेगा। इस भय से मनुष्य संतान पैदा करता है। विदेशों में जहाँ वृद्धावस्था की असहायता का भय नहीं है वहाँ लोग संतान उत्पन्न करने के लिए बेचैन नहीं होते। बच्चे को हम पढ़ाते लिखाते हैं कुछ बनाते हैं। यदि वह अनपढ़ रह गया तो भय है कि वह अपनी जीविका नहीं अर्जित कर सकता। उसका सम्मान नहीं होगा। वह शोषण का शिकार हो जाएगा।

झूठ, छल, कपट, हेराफेरी, चापलूसी, अन्धविश्वास, सत्य को दबाना भय के रूप हैं। चिंता भय का रूप है। एक व्यक्ति की एक आँख फूट गई उसे यह चिन्ता हो गई कि मेरी दूसरी आँख भी न फूट जाए। इस चिन्ता में दो रात नींद नहीं आई और उसकी दूसरी आँख में भी दर्द आने लगा तब उसने सोचा कि मैंने व्यर्थ की चिन्ता में अपनी दूसरी आँख भी खराब कर ली है। उसने चिंता छोड़ दी तो उसकी दूसरी आँख ठीक हुई।

लोभ भय का रूप है। लोभी आदमी को और भयभीत को लोभ में फंसाया जा सकता है। कठोपनिषद् में आता है कि नचिकेता यम के पास अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए गया यम ने उसे कई प्रलोभन दिए परन्तु वह किसी भी प्रलोभन में नहीं फँसा। तब यम ने समझ लिया कि यह निर्भीक है। निर्भीक व्यक्ति ही ब्रह्म विद्या का अधिकारी है। क्योंकि परमात्मा अभय है। भयभीत व्यक्ति सिकुड़ जाता है ''नायमात्मा बलहीनेनलभ्य:'' भय के कारण मनुष्य अतीत और भविष्य को पकड़े रहता है। वर्तमान में नहीं आ पाता। परमात्मा वर्तमानकाल में है। लोभ आदमी को भविष्य में रखता है। लोभ खो जाएगा तो अतीत और भविष्य खो जाएगा।

गीता में भी फल आकांक्षा को (लोभ) त्यागने के लिए कहा है। सुरक्षा की भावना बैंक, चौकीदार, पुलिस, मिलिटरी, गार्ड सब भय के कारण उत्पन्न होते हैं। महत्वाकांक्षा, शक्ति का अर्जन, जल्दबाजी, सन्देह, ईर्ष्या, प्रतिशोध, असहनशीलता, युद्ध, नई खोज यह सब भय के रूप हैं। मूल भय मृत्यु भय है। बाकि सारे भय इसकी उपज है। मृत्यु भय के कारण–

1. अपरिचित का भय। 2. अंधेरे का भय। 3. अकेलेपन का भय। 4. जीवन से अतृप्ति।

जिस प्रकार कच्चा फल वृक्ष से नहीं टूटता उसी प्रकार ही मनुष्य जीवन से अतृप्त रहा है वह मरने से डरता है।

जर्मनी के दार्शनिक नीत्से ने कहा है Ripeness is all वेद में कहा गया है '' उर्वारूकमिव बन्धनात्।''

हे ईश्वर मैं मृत्यु के समय शरीर से ऐसे छुट जाऊँ जैसे पका हुआ खरबूजा आसानी से लता से अलग हो जाता है।

5. अतीत का मोह–अतीत काल में आदमी अपने को सुरक्षित समझता है। भविष्य अनजाना होने से मानव उससे डरता है। इसलिए मरना नहीं चाहता।

6. कंजूस व्यक्ति मृत्यु से ज्यादा डरता है। क्योंकि जिस ने अपना धन नहीं छोड़ा वह शरीर को कैसे छोड़ेगा?

7. अहंकार–जिस व्यक्ति को अपनी शक्ति व सम्पत्ति का अहंकार रहा वह मृत्यु से ज्यादा डरेगा। क्योंकि मृत्यु में उसे सब छोड़ना पड़ेगा। गरीब आदमी मरने से नहीं डरता क्योंकि उसके पास छोड़ने के लिए कुछ नहीं है। मृत्यु उससे कुछ छीन नहीं सकती। अमेरिका में लोग मृत्यु से बहुत डरते हैं। भय अहंकार को है, आत्मा को नहीं।

मृत्युभय–निवारण

बचपन से बच्चे को हम किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ कभी–कभी छोड़ते रहें तो वह किसी अपरिचित वस्तु से भयभीत नहीं होगा। बच्चे को हम कभी अपरिचित के साथ नहीं जाने देते। इसलिए अपरिचित का भय जीवन भर उसके साथ रहता है। मृत्यु से हमारा कोई परिचय नहीं है, इसलिए हम मृत्यु से डरते हैं। क्योंकि मृत्यु के समय व्यक्ति बेहोश हो जाता है। सामान्य रोग जुकाम या बुखार आदि से हमारा परिचय है। क्योंकि जब बुखार शुरु होता है तो हम होश में रहते हैं, बुखार तेज होता है और उतर जाता है तो भी हम पूरे समय होश में रहते हैं। इसलिए दोबारा जब भी बुखार चढ़ता है तो हम उससे कभी भयभीत नहीं होते। हमें पहले ही पता चल जाता है कि अब बुखार चढ़ेगा।

मृत्यु बेहोशी में होती है इसलिए अनजानी रह जाती है। ध्यान के अभ्यास से यदि मनुष्य की चेतना का स्तर ऊँचा उठ जाये तो उसकी मृत्यु होश में होगी और अगला जन्म भी होश में होगा। फिर जब मृत्यु होगी तब वह व्यक्ति मृत्यु से नहीं डरेगा। इसी तरह बच्चे को हम कभी अन्धेरे में तथा अकेले में नहीं छोड़ते। अत: अकेलापन व्यक्ति को बहुत दु:खदायी होता है। यदि बच्चे को कभी–कभी अकेला छोड़ा जाये और अन्धेरे में छोड़ा जाये (बच्चा अन्धेरे में भयभीत नहीं होता) तो वह मृत्यु से भयभीत नहीं होगा। क्योंकि मृत्यु हमें अकेला कर देती है और अन्धेरे में कर देती है।

thearyasamaj.org

ओ३म् के उच्चारण के फायदे

ओ३म् के 11 शारीरिक लाभः

- श्रीमती उपासना पाहवा

ओ३म् अर्थात् ओ३म् तीन अक्षरों से बना है, जो सर्व विदित है। अ उ म् ।

''अ'' अर्थात् उत्पन्न होना, ''उ'' का तात्पर्य है उठना या उड़ना अर्थात् विकास होना ''म'' का मतलब है मौन हो जाना अर्थात् ''ब्रह्मलीन'' हो जाना।

''ओ३म् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और पूरी सृष्टि का द्योतक है। ओ३म् का उच्चारण शारीरिक लाभ प्रदान करता है।

जानें, ओ३म् कैसे है स्वास्थ्यवर्द्धक और अपनाएं आरोग्य के लिए मात्र ओ३म् के उच्चारण का मार्ग...

(1) ओ३म् दूर करे तनावः- अनेक बार ओ३म् का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनाव-रहित हो जाता है।

(2) ओ३म् और घबराहटः- अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है तो ओ३म् के उच्चारण से उत्तम कुछ भी नहीं।

(3) ओ३म् और तनावः- यह शरीर के विषैले तत्त्वों को दूर करता है, अर्थात तनाव के कारण पैदा होने वाले द्रव्यों पर नियंत्रण करता है।

(4) ओ३म् और रक्त प्रवाहः- यह हृदय और खून के प्रवाह को संतुलित रखता है।

(5) ओ३म् और पाचन क्रियाः- ओ३म् के उच्चारण से पाचन शक्ति व क्रिया तेज होती है।

(6) ओ३म् से शारीरिक स्फूर्तिः- इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।

(7) ओ३म् थकान से मुक्तिः- थकान से बचाने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं।

(8) ओ३म् से सुखद नींदः- नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है। रात को सोते समय नींद आने तक मन में इसका ध्यान करने से निश्चित नींद आएगी।

(9) ओ३म् से फेफेड़ो की शुद्धिः- कुछ विशेष प्राणायाम के साथ ओ३म् का उच्चारण करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

(10) ओ३म् और रीढ़ की हड्डीः- ओ३म् के पहले अक्षर 'ओ' का उच्च्चारण करने से कंपन पैदा होती है। इन कंपन से रीढ़ की हड्डी प्रभावित होती है और इसकी क्षमता बढ़ जाती है।

(11) ओ३म् और थायरायडः- ओ३म् के दूसरे अक्षर 'म' का उच्चारण unless करने से गले में कंपन पैदा होती है जो कि थायरायड ग्रंथि पर प्रभाव डालती है।

विचारों का महत्त्व

मार्गदर्शन : जैसे किसी किराए की बस में यात्रा करने वाला यात्री यह भलीभाँति जानता है कि न बस मैं हूँ और न बस मेरी है तथापि जब तक यात्री बस में बैठा है तब तक कोई भी विचारवान यात्री यह नहीं चाहेगा कि जिस बस में बैठा हूँ उस बस को आग लग जाए, खड्ड में गिर जाए या किसी से एक्सीडेंट हो जाए, परंतु जब यात्री बस से उतर जाएगा, फिर बस को आग लग जाए चाहे खड्ड में गिर जाए या किसी से टकरा जाए तो भी उस यात्री को क्या चिंता? क्या परवाह है?

किंतु जब तक यात्री बस में सवार है तब तक बस चाहे किसी शत्रु की ही क्यों न हों, उस बस की कुशल मनाता है और मनाना भी चाहिए। इसी प्रकार यह जीव-चेतन रूपी यात्री जब तक इस शरीर रूपी बस में सवार है, तब तक विवेकी पुरुष यह जानते हुए कि शरीर मैं नहीं शरीर मेरा नहीं, फिर भी शरीर की कुशल मनाता है और मनाना भी चाहिए।

जब जिस समय यह जीव रूपी यात्री शरीर रूपी बस से उतर जाएगा, अलग हो जाएगा, निकल जाएगा अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा फिर चाहे इस शरीर को आग में डाल दो, पृथ्वी में दबा दो, पानी में डुबो दो या कोई पशु-पक्षी ही खा जाए इस जीवन को फिर क्या परवाह? क्या चिंता है? अतः सिद्ध हुआ शरीर की कुशलता मनानी चाहिए तथा यथायोग्य पुरुषार्थ की करना चाहिए।

निवेदन : भगवान्! मैंने सुना है कि जाति, आयु, भोग ये तीनों ही पूर्वजन्मकृत कर्मानुसार निश्चित हैं। प्रसिद्ध भी है कि-

किया बहुत तकदीर मगर,
तकदीर से हिकमत चली नहीं।
हज़ारों कोशिश किया मगर,
ये शर की बला तो टली नहीं।।

अर्थात् **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** इत्यादि। जब कर्मों का फल सुख- दुःख आदि अवश्य भोगना है फिर यह नाना प्रकार की औषधि, उपचार, दवा-दुआ आदि से क्या लाभ?

यद्यपि कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है तथापि जैसे मिर्च खाने से किसी का मुख कड़वा हो गया हो तो वह मुख में मिश्री डाल ले, इससे मिर्च का प्रभाव कम हो जाता है, अधिक प्रतीति नहीं होती। वैसे ही महापुरुषों द्वारा प्राप्त हुई सद्भावना (आशीर्वाद) रूपी मिश्री की डली के माध्यम से तन में दुःख होता हुआ भी मन में दुःख की प्रतीति नहीं होती।

thearyasamaj.org

प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक राजा अपने मंत्री के साथ पर्यटन तथा शिकार के लिए जंगल में निकल गया। चलते-चलते काँटों वाली झाड़ी में राजा का वस्त्र उलझ गया। हाथ से वस्त्र को बचाने का यत्न किया, तो उँगली में बड़ा घाव आ गया। रक्त बहने लगा–वज़ीर ने पट्टी बाँधते हुए कहा–'कोई बात नहीं, प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं।'

यह बात सुनकर राजा को क्रोध आ गया–अरे! मेरी तो उँगली कट गई, इतना रक्त बह गया, पीड़ा तंग कर रही है और यह कैसा मंत्री है जो कह रहा है कि प्रभु जो करता है, अच्छा करता है? मैं तो ऐसे मंत्री के बिना ही अच्छा हूँ।

'मंत्री, आप कृपया जाइये। मैं ऐसे साथ से अकेला ही अच्छा।' मंत्री ने उत्तर में कहा, 'जो आज्ञा आपकी, मैं अपना रास्ता लेता हूँ।'

राजा अकेला ही चल पड़ा। चलते-चलते दूसरे राजा के राज्य में जा पहुँचा। वहाँ उस दिन देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष की तलाश में थे। खोजते-खोजते सिपाहियों की दृष्टि राजा पर पड़ी–सुन्दर है, शरीर अच्छा है, देवी इसकी बलि से बहुत प्रसन्न होगी। राजा को सिपाही मंदिर में ले गये।

बलि चढ़ाने से पूर्व जब राजा को स्नान कराया जाने लगा, तो पुजारी की आँखों ने राजा की कटी उँगली को देखा और पुकार उठा, 'अरे! यह तो अंग-भंग है, इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।'

राजा को छोड़ दिया गया। राजा अपनी नगरी की ओर आ रहा था। विचार भी कर रहा था कि मंत्री ने ठीक ही तो कहा था कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। यदि हाथ पर घाव न आ गया तो आज यमदूत ले ही गये थे। इस घाव ने ही बचा लिया। ऐसे मंत्री का तो मान होना चाहिए, न कि उसे दंड मिलना चाहिए। नगरी में पहुँचने से पूर्व राजा मंत्री की खोज करने लगे। वहाँ एक नन्हीं सी कुटिया में मंत्री को बैठे देखा तो उसे अपने साथ लेकर राजा अपनी नगरी में जा पहुँचा।

राजा ने मंत्री से कहा–'आपने तो मेरी उँगली कटने पर बड़े पते की और मर्म की बात कही थी। मैं ही अल्पबुद्धि समझ न पाया। इसी घाव के कारण मैं मौत के मुँह से निकल आया हूँ, परन्तु मेरे अच्छे मंत्री! यह बताओ कि मेरे घायल होने में तो भला हुआ, परन्तु मैंने आप-जैसे तत्त्वदर्शी का जो अपमान किया और आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौन-सी भलाई देखी?'

मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा–'यह तो और भी अधिक अच्छा हुआ। यदि आप मुझे दुत्कार न देते तो मैं आपके साथ ही रहना था। तब सिपाही मुझे भी पकड़कर ले जाते। आप तो घायल होने के कारण छूट जाते, परन्तु मैं तो अंग-भंग नहीं था। तब वह मेरी ही बलि चढ़ा देते। मेरे ऊपर तो प्रभु ने विशेष कृपा की कि ज़ख्मी भी न किया और मृत्यु का ग्रास बनने से भी बचा लिया, इसलिए यही कहना उचित है कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। राजन्! हमारी दृष्टि छोटी है, प्रभु की आँखें बहुत दूर तक देखती हैं।'

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

HEADING

Life is full of many contradictions
Sometimes
the warmest dawn
can feel cold in spirit.
And sometimes
the sun shines brightest
on the most bitter winter day.
Life should seek warmth.
It should seek the love
and companionship of like souls.
It should search for the smile
in the face of tears.
It should search for
friendship`s warm glow
in the midst of darkness
Life was never meant to
belived in solitude.
It was always meant to be shared.
So in life,
give yourself that second chance.
Open up to new friendships.
Give the benefit of a doubt
when you aren`t certain.
Live life to the fullest.
Not in what you DO, but
in what you GIVE to others.
And in doing so,
you'll find that you've
received more from life
than you ever expected.

thearyasamaj.org

सबका प्रिय फल केला

- श्री अभय कुमार जैन

जर्मनी के गोलिर्जन विश्वविद्यालय के प्रो. पूडेल ने यह सलाह दी है कि यदि आप ऊब के शिकार हैं, परेशान है तो केला खाइये, उनके मतानुसार केले में सेरोटोनिन नाम तत्व होता है जो मानसिक परेशानी को मिटाता है।

रूस के वैज्ञानिकों ने शोध करके यह बताया कि केला खाने से शरीर का विकास अच्छी तरह होता है व स्वस्थ्य अच्छा रहता है। ब्रिटेन के एस्टन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गहन अनुसंधान के बाद यह घोषित किया है कि पेट के अल्सर के लिये केले के मुकाबले अन्य कोई औषधि नहीं है। प्राचीन चीन में केला पीलिया, सिरदर्द, खसरा और पेट की कुछ बीमारियों के लिए काम आता था। आयुर्वेद के अनुसार पका केला ठंडा रूचिकारक, पुष्टिकारक, वीर्य बढ़ाने वाला, रक्त विकार नाशक, शरीर पर मांस बढ़ाने वाला, पथरी, रक्त, पित्त दूर करने वाला प्रदर व नेत्र रोग मिटाने वाला होता है।

केले का वर्णन हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। मांगलिक अवसरों पर इसका प्रयोग किया जाता है। केले का पौधा तो भगवान् को भी प्रिय है। कहीं कोई आयोजन हो, स्वागत सत्कार हो केला अपने पूरे परिवार के साथ पहुंच जाता है। केले के पत्ते पर भोजन करना शुद्धतम माना जाता है। दक्षिण भारत में आज भी घरों में ही नहीं कतिपय होटलों में भोजन केले के पत्तों पर ही परोसा जाता है।

केले के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दूसरा कोई भी प्राकृतिक खाद्य पदार्थ इतना पौष्टिक नहीं होता है। उच्च रक्तचाप नियंत्रण के लिये ज़रूरी पोटेशियम से समृद्ध केले में विटामिन 'ए' 'बी' एवं 'सी' भी होते हैं। दूध पीने वाले शिशु के लिये रोज़ विटामिन सी, नियासिन, राइबोप्लेविन और थायमिन की जितनी मात्रा आवश्यकता होती है। उसका चौथाई अंश केले में ही मिल जाता है। केले में सोडियम कम होता है। कोलेस्टेरोल बिल्कुल नहीं होता है।

चरक ऋषि के अनुसार भोजन करने के बाद केले का सेवन करने से सदैव निरोग रहते हैं।

केले के अन्य उपयोग

- शारीरिक रूप से कमज़ोर व्यक्तियों को चाहिये कि 1-2 केले खाकर ऊपर से दूध पीयें इससे मोटापा बढ़ता है।
- वैज्ञानिकों का यह मत है कि अल्सर की प्रचलित दवाईयों से भी अधिक असरकारक व प्रभावकारी दवा है-हरा केला। इसके प्रयोग से न केवल अल्सर ठीक हो जाता है वरन् बनने जा रहा है तो भी तुरंत रूक जाता है।
- पेचिश में पके केले दही के साथ सेवन करें। केला शरीर से वायु और गर्मी निकालता है, पेट में जलन हो तो भी केला खाना चाहिए।
- मुंह या जीभ में छाले हो जाये तो एक केला गाय के दूध से बने दही के साथ कुछ दिनों तक खायें।
- केले में लौह तत्व होने के कारण यह एनीमिया के रोगी के लिये अति लाभकारी है क्योंकि केले के सेवन से खून में बढ़ोतरी होती है।
- सूखी खांसी बार-बार आना, पसलियों में दर्द होने पर एक केला 2 काली मिर्च चबाकर खायें उसके बाद एक बड़ी चम्मच शहद चाट ले। यह प्रयोग सुबह, शाम एवं दोपहर, दिन में तीन बार दो दिन तक लें।
- पीलिया रोग में भी केले का सेवन लाभकारी है। कच्चे केले की सब्जी खानी चाहिये व प्रतिदिन भोजन के पश्चात् सुबह शाम दो-दो केले खाने चाहिये।
- नकसीर की बीमारी में पके केले के टुकड़े दूध व चीनी मिलकार सुबह-शाम सेवन करना चाहिये ऐसा 8-10 दिन तक नियमित करें।
- बार-बार पेशाब आने पर केले के साथ आंवले का रस का शक्कर का सेवन करना चाहिए।
- बच्चे को केले में शहद मिलकार देने से वह मिट्टी खाना छोड़ देता है।
- आग से जलने पर जले हुए स्थान पर केले को फैंटकर लगाना चाहिये अर्थात् केले का गुदा लगाने से आराम मिलता है।

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीध्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद!

-प्रबन्धक

thearyasamaj.org

बचपन

बच्चे अति सरल होते हैं। उनके मन, वाणी और कर्म में एकता होती है। वे हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो हमें अथाह शान्ति एवं प्रसन्नता मिल गई हो। लेकिन धीरे-धीरे अन्य लोगों से सम्पर्क बढ़ने पर उनका निर्मल मन मलिन होने लगता है।

सबसे पहले माँ-बाप का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। वह उनके विचारों एवं रहने-सहने के ढंग से बहुत प्रभावित होता है। माँ-बाप के स्नेह से उसमें आत्मविश्वास पनपने लगता है। माँ-बाप द्वारा गोद में उठाने, चूमने व दुलार करने को भी असीम आनन्द की अनुभूति होती है।

सभी माता-पिता का यह अनुभव है कि बालक सबसे पहले उन्हीं का अनुकरण करता है। यदि कोई पिता सुबह प्राणायाम करता है तो उसका पुत्र भी प्राणायाम का अनुकरण करके नाक दबाता है। यदि किसी का पिता सिगरेट पीता है तो उसके बच्चे उसकी अनुपस्थिति में कागज लपेटकर सिगरेट का आकार बनाकर उसे मुँह में डालकर साँस खींचते है। इस प्रकार बालक के सब प्रारम्भिक संस्कार माता-पिता के आचार-व्यवहार के अनुसार स्थिर होने लगते हैं।

अधिकांश बालक माता-पिता के स्वभाव और विचार भी ग्रहण करते चलते हैं। चिड़चिड़े, कूंस, क्रोधी, ईर्ष्यालु और गप्पी माता-पिताओं के बच्चे भी चिड़चिड़े, कंजूस, क्रोधी, ईर्ष्यालु और गप्पी हो जाते हैं। वैद्य का पुत्र बिना वैद्यक सीखे ही सैकड़ों औषधियों के नाम जान जाता है। वकील का पुत्र भी अनेक अपराधों और उनसे सम्बद्ध धाराओं का परिचय जान लेने के साथ वकालत के अनेक हथकंडो से भी परिचित हो जाता है। कालिदास के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि उनके यहाँ के सेवक तक संस्कृत बोलने में बड़े निपुण थे और मण्डन मिश्र के घर तो उनके तोता-मैना भी शास्त्रार्थ किया करते थे। इस सबका कारण यह है कि मनुष्य जिस संगति और वातावरण में रहता है उसके प्रभाव में निरन्तर पड़कर वह अपना संस्कार बनाना चाहता है। ये संस्कार प्रारम्भिक अवस्था में ही बनते हैं और फिर जब एक बार बन जाते हैं, तब फिर कभी बदलते नहीं। इसलिए बालक के प्रारम्भिक संस्कार का निर्माण करने से पहले माता-पिता को स्वयं अपने संस्कार ठीक करने चाहिए।

माता-पिता को बालक के सम्मुख कुछ भी बात कहने से पहले विचार कर लेना चाहिए कि बात कहनी चाहिए या नहीं। बहुत से लोगों को गाली देने का बुरा अभ्यास होता है और वह अभ्यास इस चरम-सीमा तक पहुँच जाता है कि वे बात-बात में गाली का प्रयोग करने लगते हैं। बहुत से लोग जब किसी से मिलना नहीं चाहते, तब अपने बच्चों से कहला देते हैं-'कह दो घर पर नहीं है।' बहुत से लोग बात-बात में इतना झूठ बोलते हैं कि बच्चे भी उनके उस झूठ को जान जाते हैं और उनके मन में यह संस्कार जम जाता है कि झूठ बोलना या गाली देना कोई बुरा काम नहीं है।

बच्चे माँ को बहुत अधिक स्नेह करते हैं। वे पापा से भी यह अपेक्षा करते हैं कि वह माँ को प्यार करें। माँ से पापा किसी प्रकार के कड़वे शब्द न बोलें। जो बातें अथवा व्यवहार माँ को पसंद नहीं, वैसी बातें या व्यवहार पापा न करें। बच्चा चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, पापा का मम्मी के प्रति प्रदर्शित किया गया स्नेह देखकर मन-ही-मन प्रसन्न होता है। पत्नी के प्रति अपने प्यार को स्नेह भाव से प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति ही अच्छा पिता होता है और ऐसे पिता के बच्चे कम ही बिगड़ पाते हैं। लेकिन पति-पत्नी के झगड़े देखने, सुनने, सहने वाले बच्चे हमेशा भावनात्मक रूप से तनाव में रहते हैं। छोटी उम्र के बच्चों के मन में पिता का भय, घर का तना हुआ माहौल ही उन्हें क्रोधी और चिड़चिड़ा बना देता है।

बच्चे अभिभावकों का समय चाहते हैं। बच्चे चाहे छोटे हों या बड़े, सदा यह चाहते हैं कि माता-पिता उन्हें कुछ समय दें। रोता हुआ बच्चा भी मां की गोद में जाकर चुप हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बच्चे मां-बाप के जितने पास रहते हैं, उनका मानसिक विकास तो संतुलित होता ही है, उनका शारीरिक विकास भी अच्छा होता है। छोटे बच्चों को जब भी मां अपने पास सुलाती है, तो वे सुख की नींद सोते हैं। इसके विपरीत जब बच्चे अकेले सोते हैं, तो वे बीच-बीच में जाग कर माँ का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं।

हम बच्चों का दृष्टिकोण समझे। बच्चे अपने मन की सारी बातें माता-पिता को बताना चाहते हैं। लेकिन आधुनिक बनने की सोच ने अभिभावकों को इतना व्यस्त बना दिया है कि उन्हें यह देखने का समय ही नहीं मिलता कि उनके बच्चे क्या कर रहे हैं? क्या पढ़ रहे हैं? पिता तो अपने कार्यो में इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि वे कई-कई दिनों तक अपने बच्चों से मिल ही नहीं पाते। माँ भी नौकरी में या अपनी सहेलियों में इतनी व्यस्त रहती है कि उन्हें बच्चों से बात करने का समय ही नहीं मिलता।

बच्चों के प्रति लाड-प्यार करने के साथ-साथ यदि हम घर आए मेहमानों और परिचितों से बच्चों का परिचय कराएं और उन बच्चों को भावनात्मक रूप से इन लोगों से जोड़े तो वे बड़े होकर समाज में आनन्दपूर्वक जीवन यापन कर सकेंगे। अतः बच्चों में बचपन में ही संस्कारों की नीव डालें। हर माता-पिता की इच्छा होती है कि उनका बच्चा बड़ा होकर उनका नाम रोशन करे और उनके बुढ़ापे का सहारा बने। लेकिन यह तभी संभव है, जब बचपन से ही उसमें अच्छे संस्कार डाले जाएं। माँ बालक की पहली गुरु समझी जाती है। अतः संस्कार डालने की जिम्मेदारी पिता के साथ-साथ माँ की भी होती है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब भी माँ ने बच्चों में अच्छे संस्कार डाले हैं, तब-तब बच्चों ने योग्य बनकर परिवार का नाम उज्ज्वल किया है।

- प्रस्तुतिः संस्कारम्

thearyasamaj.org

मित्र कौन?

- श्रीयुत पं. शिवकुमार जी शास्त्री

शास्त्रकारों ने अच्छे मित्रों के छह लक्षण गिनाए हैं-

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गत च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

मित्र का पहला कर्त्तव्य है कि निरन्तर सम्पर्क के कारण अपने मित्र के जीवन की जो बुराई पता लगे, उसे छोड़ने के लिए प्रेमपूर्वक प्रेरणा करे, किन्तु आज स्थिति यह है कि स्वयं हम जिस व्यसन में लिप्त हैं, मित्र को भी उसी कीचड़ में घसीटते हैं। स्वयं सिगरेट पीते हैं तो प्रयत्न यही होता है कि हमारा मित्र भी साथ देने लगे। मित्रों को सिनेमा देखने की दावत देना और आग्रहपूर्वक घसीट ले जाना तो शिष्टाचार का अंग बन गया है। किन्तु अच्छे मित्र का कर्त्तव्य यही है कि वह मित्र को दुष्कर्म छोड़ने की प्रेरणा करता रहे।

मित्र का दूसरा कर्त्तव्य है कि बुराई को छुड़ाकर ही सन्तुष्ट न हो जाय, ''योजयते हिताय''-भलाई के कामों में उसे लगावे भी। दुष्कर्म की बीमारी को छोड़ने का पूरा उपचार भी यही है, क्योंकि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है कि- '' Man Cannnot remain Stationary, he must either improve or impair''- मनुष्य कभी एकरस नहीं रह सकता, या तो वह उन्नति की ओर अग्रसर होगा अथवा अवनति की ओर लुढ़केगा। बुराई के दुःसंस्कारों से पीछा तो तभी छूटेगा जब बुराई के स्थान की पूर्ति अच्छाई से होती, अतः मित्र को बुराई से हटाकर भलाई में लगावे।

मित्र का तीसरा कर्त्तव्य है-'' गुह्यं च गूहति''- छिपाने योग्य बात को छिपावे। जब यह अनुभव हो कि मेरा मित्र अपनी कमियों को दूर करने के लिए तो प्रयत्नशील है, फिर भी कभी कोई भूल हो जाती है, तो वह क्षन्तव्य है। इस अवस्था में मित्र की बातों की अनदेखी कर देनी चाहिए। पर आजकल के मित्रों का यह पक्ष अत्यन्त दुर्बल है। वे मित्र की बातों का यह कह कर कि-'हमारे मित्र हैं, हमसे उनकी कोई बात छिपी नहीं है' या 'और किसी को तो हम कहते नहीं, किन्तु आपसे कोई बात छिपाई नहीं जा सकती', आदि बातें सभ्यजनोचित भाषा में कहकर मित्र के दोषों का सारी बस्ती में ढिंढोरा पीट देते हैं। ऐसे मित्र शत्रुओं से भी अधिक भयंकर होते हैं।

मित्र का चतुर्थ कर्त्तव्य है-''गुणान् प्रकटीकरोति''-मित्र के गुणों का समाज में वर्णन करे। इससे उसे और अधिक शुभकर्म करने की प्रेरणा मिलेगी। अब आगे पाँचवा कर्त्तव्य कहा-''आपद्गतं च न जहाति''- विपत्ति में घिरे मित्र की कभी उपेक्षा न करे। जितना अपना सामर्थ्य हो, उसके कष्ट निवारण में लगावे।

छठा कर्त्तव्य है-''ददाति काले''- मित्र को यदि आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है तो अवश्य दे। बुरे दिन किसी के सदा नहीं रहते। यदि आप संट में किसी की सहायता करते हैं, तो इससे मित्रता की जड़ें पाताल तक पहुँच जाती हैं। एक प्रकार से मित्रता की परख विपत्ति में ही होती है। इस विषय में ऋग्वेद में बहुत उत्तम परामर्श दिया गया है-

न स सखा यो न ददाति सख्ये
सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात् प्रेयात् न तदोकोऽस्ति
पूणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥

- ऋ. 10.117.714

सहायता के इच्छुक मित्र की समय पर जो सहायता नहीं करता वह मित्र ही नहीं हैं ऐसे मित्र को छोड़कर विपत्ति में सहायक किसी दूसरे मित्र को खोजना चाहिए।

किसी उर्दू शायर ने भी बहुत सुन्दर कहा है-

ज्वाले-जाहोदौलत में बस इतनी बात अच्छी है,
कि दुनिया को बखूबी आदमी पहचान लेता है।

तुलसीदास ने भी बहुत अच्छा कहा है-

जे न मित्र-दुख होहिं दुखारी,
तिनहिं बिलोकत पातक भारी।

महात्मा भर्तृहरि के गिनाए सन्मित्रों के उक्त लक्षण उच्चकोटि के धर्मात्माओं में ही मिल सकते हैं। सामान्यजन तो आपाधापी और स्वार्थ साधन की उधेड़बुन में ही लगे रहते हैं। किन्तु सच्चे मित्र के पूर्ण लक्षण भगवान् में ही चरितार्थ होते हैं। मित्र का पहला लक्षण बताया-पाप से बचाए। सांसारिक मित्र तो पाप करने पर ही उससे बचने का परामर्श देगा, किन्तु वह प्रभु तो ऐसा अन्तर्यामी मित्र है कि मन में ज्यों ही कोई बुरे संस्कार उदित होते हैं, उसी समय भय, शंका और लज्जा के भाव पैदा करके उस बुराई से बचने की प्रेरणा करता है। उसी प्रकार अच्छा काम करने के विचार आते ही उल्लास और हर्ष की तरह सी मन में उठती है। यह प्रेरणा भी प्रभु की ओर से ही है। भले कामों में प्रेरणा करने का जो मित्र का दूसरा लक्षण है, वह भी प्रभु पर ही घट रहा है। तीसरा लक्षण है छिपाने योग्य बात को छिपावे। इसमें तो मनुष्य के ऊपर भगवान् की असीम कृपा है। हमारा कोई भी दुर्विचार और दुर्व्यसन ऐसा नहीं है जिसे भगवान जानता न हो। फिर भी न केवल उसे गुप्त रखता है, अपितु दया और सहिष्णुता का वरदहस्त भी उसका हमारे

thearyasamaj.org

ऊपर सदा बना रहता है। यदि हम एक-दूसरे के उन गुप्त भावों से परिचित हो जाएँ तो बखेड़ा खड़ा हो जाय। श्रीमान जी, आदरणीय और पूज्य के चिकने-चुपड़े विशेषण धरे रह जाएँगे। ठीक कहा है किसी शायर ने-

ये खूब क्या है, ये जीस्त क्या है,
जहाँ की असली सरिश्त क्या है?
बड़ा मजा हो तमाम चेहरे
अगर कोई बेनकाब कर दे॥

मित्र का चौथा गुण कि 'मित्र के सद्गुणों को प्रकट करे, उनकी सराहना करे'- इस विषय में भी सज्जनों पर प्रभु-कृपा होती है। संसार में उत्तम कोटि के व्यक्ति नाम और यश की भावना से कोई काम नहीं करते, अपितु अपना कर्त्तव्य समझकर उसका आचरण करते हैं। जैसा कि कहा है-''ददामि देयमित्येव यजे यष्टव्यमित्युत''-देना मेरा कर्त्तव्य नहीं है जब किसी के सदाचरण की सुगन्ध संसार में न फैली हो और लोग उससे अपरिचित रहे हों। ठीक लिखा है उर्दू के महान् शायर अकबर ने-

निगाहें कामिलों पर पड़ ही जाती हैं जमाने की।
कहीं छिपता है 'अकबर' फूल पत्ते में निहाँ होकर?

अतः प्रभु अपने ढंग से हमारे गुणों का प्रकाश भी करता है। पाँचवाँ गुण-''विषद्-ग्रस्त मित्र को सहारा दे, उसकी उपेक्षा न करे।'' इसमें भी प्रभु ही पूर्ण हैं। ठीक है कि दुष्कर्म के फलस्वरूप विपत्ति भी प्रभु-व्यवस्था से ही आती है, किन्तु उस विपत्ति भी प्रभु-व्यवस्था से ही आती है, किन्तु उस विपत्ति का लक्ष्य सुधार करना है, केवल कष्ट देना नहीं। पर साथ ही विपत्ति के समय जो धैर्य और दृढ़ता आती है, वह प्रभु का ही वरदान है। कई बार आपत्ति की घटा उतर जाने पर अपने धैर्य और अपनी शान्ति पर स्वयं को आवचर्य होता है। अन्तिम लक्षण मित्र को देने का है। इसमें तो वह प्रभु कमाल ही करते हैं। यदि हमारा दुष्कर्म कोई बाधक न हो तो उसे निहाल करते देर नहीं लगती-

तेरे करम में कमी कुछ नहीं, करीम है तू।
कुसूर मेरा है झूठा उम्मीदवार हूँ मैं॥

है यह समझकर देता हूँ और यज्ञ भी अपना धर्म समझकर करता हूँ, नाम और यश के भाव से नहीं।

अनमोल वचन

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं। **-एमर्सन**

महान संकट में और जबकि आशा बहुत कम होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

-लिवी

नव जीवन दाता-आर्यसमाज

-नरेश चन्द्र आर्य

आर्यसमाज नवजीवन दाता, सबका भाग्य विधाता है।
चरित्र, ज्ञान और मानवता का, सबको पाठ पढ़ाता है।।

आर्यसमाज ने मानव को, एक ईश्वर बतलाया है,
निराकार और सर्वव्यापक, वेदों से उसे बताया है।।
शुद्ध आत्मा होकर जो, प्रभु का चिन्तन करता है।
वही शुद्धात्मा प्रभु के, दर्शन को कर पाता है।।

पाखण्ड का मर्दन होता था, सत्य ज्ञान न लेश था।
आर्यसमाज की स्थापना, वेद प्रचार उद्देश्य था।

आर्यसमाज भूमण्डल में, वेद ध्वजा फहराता है।
आर्यसमाज न होने पर, हिन्दु दमन हो रहे थे।
पर धर्म अपनाकर, वे अन्धकार में धंस रहे थे।।

शुद्धि कर आर्यसमाज में, पाखण्डियों को ललकारा है।
आर्यसमाज ने भारत को, स्वतन्त्रता पाठ पढ़ाया है।।

अंग्रेजों के दमन चक्र से, बलि दे उसे छुड़ाया है।

आर्यसमाज आज विश्व में, क्रांतिकारी कहलाता है।।
आर्यसमाज से पूर्व भारत में, नारी दमन का जोर था।
नारी सबकी पूज्य है, इसका जरा न होश था।।

आर्यसमाज, नारी को, निर्माता बतलाता है।
आर्यसमाज ने भारत को, समानता सिखलाई है।।

छुआ-छूत और ऊँच-नीच की, खड़ी दीवार गिराई है।
आर्यसमाज मानव को, समता मन्त्र सिखाता है।।
सच्चे ''आर्य'' बनकर हम, वेदों का प्रचार करें।
चरित्र ज्ञान का शुभ मन्त्र लें, अज्ञान का संहार करें।।

ऐसा उच्च कार्य करें जो, सबका प्रेरक दाता है।
आर्य समाज नव जीवन दाता सबका भाग्य विधाता है।।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

thearyasamaj.org

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'संस्कृति-गौरव' सम्मान से सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, प्रख्यात् लेखक, यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को उनकी वैदिक धर्म प्रचार की सफल अमेरिका एवं कनाडा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर आर्यसमाज सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली के विशाल सभागार में 'जय किशनदास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट' की ओर से शाल, कलात्मक स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं मोतियों की माला भेंटकर 'संस्कृति गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया। उन्हें यह सम्मान भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के पूर्व महानिदेशक पद्श्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी ने विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में प्रदान किया।

खचाखच भरे हाल में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. श्याम सिंह शशि ने कहा कि अपने आप में ही एक संस्था युवा आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने जो कार्य अकेले कर दिखाया है वह अनेक संस्थाओं के लिए प्रेरणा है। देश ही नहीं अपितु विदेशों भी जाकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य आचार्य श्री ने किया है वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है।

अध्यात्म पंथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (प्रख्यात साहित्यकार), श्री जयभगवान अग्रवाल (पूर्व विधायक), श्री ताराचन्द्र बंसल (चेयरमेन, रोणिी जोन), श्री यशपाल आर्य (निगम पार्षद), श्री सुरेन्द्र गुप्ता (प्रधान, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली वेदप्रचार मण्डल), श्री सोमनाथ आर्य (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव) श्री हीरालाल चावला (उपाध्यक्ष, वेद संस्थान), डॉ. गोविन्द्रवल्लभ जोशी (वरिष्ठ पत्रकार), श्री सुखदेव आर्य तपस्वी (वेदप्रवक्ता), डॉ. धर्मवीर सेठी (संपादक-नीति), श्री राजेन्द्र आर्य (अध्यक्ष, जयकिशन-सुनहरी देवी ट्रस्ट), प्रो. अनिल राय (हिन्दी विभाग, दि.वि.) श्री अतुल आर्य (माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट) आदि गणमान्य महानुभावों ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को तत्वचिन्तक, श्रेष्ठशिक्षा शास्त्री, प्रखर पत्रकार, निःस्वार्थ समाज सेवी बताकर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अनेक पत्रकार, साहित्यकार तथा विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विश्वकल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसके मुख्य यजमान आशीष गुप्ता एवं श्रीमती शालिनी गुप्ता, श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं श्रीमती सुनीता चौधरी थे। यज्ञोपरान्त आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी के यशस्वी प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने ध्वजारोहण किया।

श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' के भजनों एवं श्री विनय शुक्ल विनम्र एवं श्री हर्षवर्धन आर्य की कविताओं ने सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रिं अरूण आर्य एवं श्री राजीव आर्य ने किया। उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समाज प्रधान श्री शिव कुमार गुप्ता जी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त में विशाल ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को 'संस्कृति-गौरव' सम्मान से सम्मानित करते हुए दायें से-री ताराचन्द्र बंसल जी (चेयरमेन, रोहिणी जोन) पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी (पूर्व महानिदेशक, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार) एवं श्री राजेन्द्र आर्य (अध्यक्ष, जय किशन दास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट)

पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि जी को शाल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए बाएं से प्रिं अरूण आर्य, श्री विश्वबन्धु शास्त्री, श्री शिवकुमार गुप्ता, डॉ. श्यामसिंह शशि, श्री यशपाल आर्य, श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री सुरेन्द्र गुप्ता एवं श्री राजीव आर्य

thearyasamaj.org

त्यागमयी, ममतामयी माता कमला आर्या

श्रीमती कमला आर्या जी के 75 वें जन्मदिवस

(3 दिसम्बर 2014) पर श्रद्धा सुमन

हम सब की प्रेरणास्रोत, कर्त्तव्य पारायणा, दया, ममता, आदर्श एवं परोपकार की साक्षात् प्रतिमूर्ति, समाजसेवा व रचनात्मक कार्यों में सदैव प्रोत्साहन देने वालीं

माता कमला आर्या जी को शत्-शत् नमन।

(माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के सभी सदस्य एवं 'कमल ज्योति' परिवार)

कमला जी, शत शत वन्दन

घर आंगन को सुरमित करता, जीवन पुष्प तुम्हारा
स्मृति दीपक जब जल उठता है, हो जाता उजियारा
यह मुस्कान तुम्हारी मनहर, नई प्रेरणा पाते
फिर मीठी-मीठी यादों में, हम सब हैं खो जाते
अभिवादन अभिनन्दन,
कमला जी, शत शत वन्दन॥

आंधी में दीपक जलते हैं, यह तुम ने सिखलाया
विष पीकर भी अमृत बांटा, जीवन यज्ञ बनाया
कण्टक पथ पर सुमन खिलाना, फिर हंसना मुस्काना
कटुता तज कर कैसे जीना, हम ने तुम से जाना
अभिवादन अभिनन्दन,
कमला जी, शत शत वन्दन॥

- ओम प्रकाश ठाकुर

thearyasamaj.org

Delhi - 01

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 Posting Date 5 or 6 Dec. 2014 DL (N)0225/2012-14

ओ३म्

प्रेषक Date of Publication: 25 November 2014

कमल ज्योति

दिसम्बर 2014 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में

संग का प्रभाव

गर्म पानी में कोई वस्तु डालो–उदाहरणत: आलू आदि तो वह इस संग से गर्म तो हो जावेंगे बाहर से नर्म परन्तु अन्दर से नर्म न होवेंगे। हां उबलते हुए पानी में डाले जाते हैं–वह स्वयं उबलता हुआ पानी जो उथल-पुथल कर रहा है–अपने संग में आई वस्तु को गर्म और नर्म कर देगा, और अपने साथ उथल-पुथल भी करेगा। ऐसे ही जो साधक किसी साधारण शुभ जीवन वाले के साथ लगते हैं–उनमें नाममात्र प्रभाव होता है–और जो पूरे तपस्वी साधना करने वाले या करते हुए–के संग लगते हैं, तब उनमें परिपक्वता आ जानी संभव है। जितना पदार्थ सख्त होता है–उतनी अधिक उथल-पुथल की आवश्यकता होती है। ऐसे ही जो कठोर-बुद्धि या कठोर-हृदय होते हैं–उन्हें अधिक तपस्या की आवश्यकता पड़ेगी।

वीतराग महात्मा पभआश्रित जी महाराज

P.K. JAIN ENGINEERS & COLLABORATORS
PKS DEVELOPERS (P) LTD

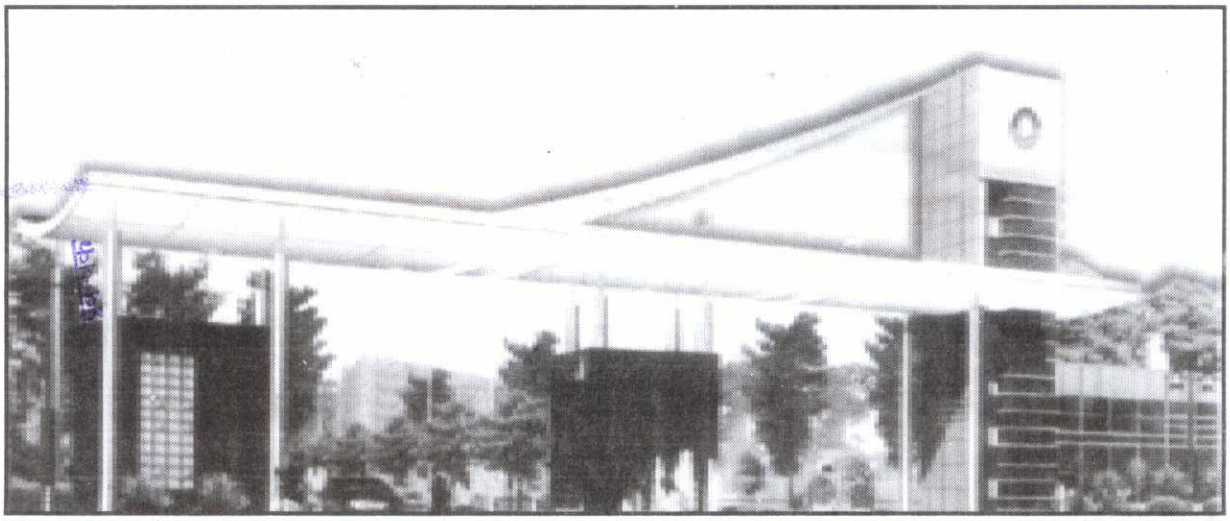

P.K. JAIN B.E. (Civil)

C-407, Saraswati Vihar, Pitampura, New Delhi-110034
Ph. : 011- 27025050, Mobile : 9811142440
Sidharth Jain, Ph.: 011- 27025050, Mob.: 9810562000
E-mail : info@pksdevelopers.com Website : www.pksdevelopers.com
Building A Name Brick by Brick

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित